

भारत की जलवायु

भारत में विभिन्न ऋतुओं में मौसम की दशाओं में भिन्नता पाई जाती है। यह भिन्नता मौसम के तत्वों - तापमान, आर्द्रता, वर्षण, वायुदाब, पवनों की दिशा एवं गति में परिवर्तन से आती है।

मौसम एवं जलवायु में अंतर → मौसम वायुमंडल की क्षणिक अवस्था है, जबकि जलवायु का ताप्यर्थ अपेक्षाकृत लंबे समय की मौसमी दशाओं के औसत से होता है। मौसम जाफ़ी-जाफ़ी बदलता है, जैसे कि एक दिन में या एक सप्ताह में परंतु जलवायु में बदलाव 50 अथवा इससे भी अधिक वर्षों में आता है।

मानसून → ऐसी जलवायु जिसमें ऋतु के अनुसार पवनों की दिशा में उल्लंघन हो जाता है। भारत की जलवायु उष्ण मानसूनी है, जो दक्षिणी एवं दक्षिणी-पूर्वी शीथल में पायी जाती है।

भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक → भारत की प्रभावित करने वाले कारकों को दो वर्गों में बाँटा जाता है -

- 1) स्थिति तथा उच्चावच संबंधी कारक
- 2) वायुदाब एवं पवन संबंधी कारक

(1) स्थिति तथा उच्चावच संबंधी कारक → इसके अंतर्गत निम्न कारक आते हैं -

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| (i) अक्षांश | (iv) समुद्र तट से दूरी |
| (ii) हिमालय पर्वत | (v) समुद्र तल से ऊँचाई |
| (iii) जल और स्थल का वितरण | (vi) उच्चावच |

(i) अक्षांश → भारत का उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबंध में और (2)
कर्क रेखा के दक्षिण में स्थित भाग उष्ण कटिबंध में
पड़ता है। उष्ण कटिबंध भूमध्य रेखा के अधिक निकट होने के
कारण दूर वर्ष ऊंचा तापमान और कम दैनिक एवं वार्षिक
तापान्तर का अनुभव करता है। कर्क रेखा से उत्तर में स्थित भाग
भूमध्य रेखा से दूर होने के कारण उच्च दैनिक तथा वार्षिक
तापान्तर के साथ विषम जलवायु पायी जाती है।

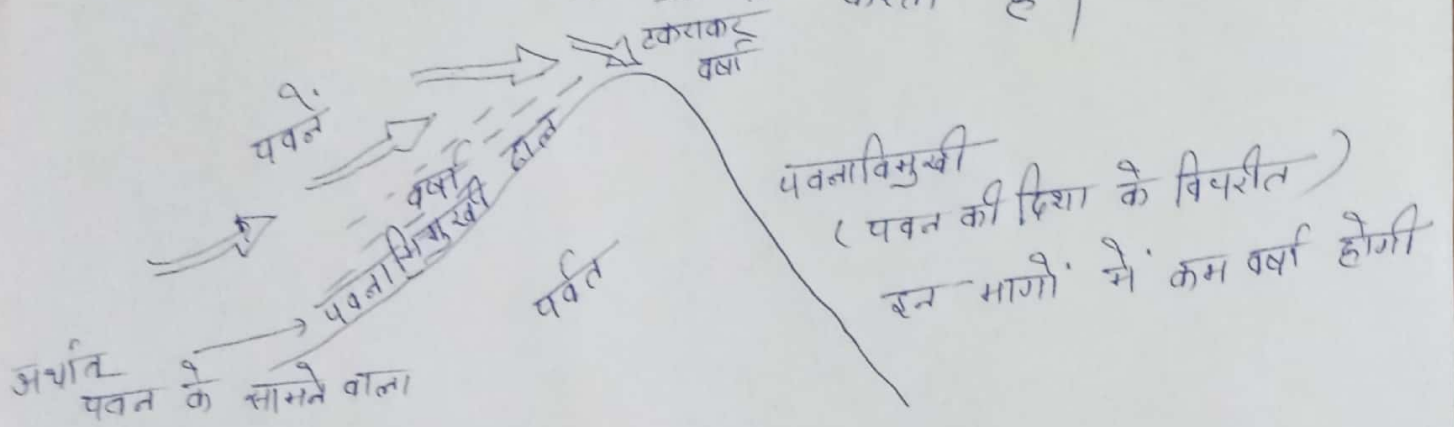
(ii) हिमालय पर्वत → हिमालय एक प्रभावी जलवायु विभाजक की भूमिका
निभाता है। हिमालय पर्वतमाला उत्तर से आने वाली
हवाओं से अभेद्य सुरक्षा प्रदान करती है। जमा देने वाली ये
ठंडी पवनें उत्तरी ध्रुव रेखा के निकट पैदा होती हैं और
मध्य तथा पूर्वी एशिया में आर-पार बहती हैं। इसी प्रकार
हिमालय पर्वत मानसून पवनों को रोककर उपमहाद्वीप में वर्षा
का कारण बनता है।

(iii) जल और स्थल का वितरण → भारत दक्षिण में अरब सागर
हिंद महासागर तथा बंगाल की खाड़ी
एवं उत्तर में पर्वतराज हिमालय से घिरा हुआ है। स्थल की
अपेक्षा जल दैर से गर्म होता है एवं दैर से ठंडा होता है।
जल और स्थल में तापमान के इसी अंतर के कारण
भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न तटवृत्तों में विभिन्न वायुदाब
प्रदेश विकसित हो जाते हैं। वायुदाब में भिन्नता ही मानसून
पवनों के दिशा परिवर्तन का कारण बनती है।

(iv) समुद्र तट से दूरी → लंबी तट रेखा के कारण भारत के
विस्तृत तटीय प्रदेशों में जलवायु
एकसमान पायी जाती है। भारत के आंतरिक भाग समुद्र के
समकारी प्रभाव से वंचित रह जाते हैं। ऐसे क्षेत्रों में विषम
जलवायु पाई जाती है। विभिन्न तटों के निवासी तापमान की विषमता
और तटवृत्त परिवर्तन का अनुभव नहीं कर पाते। वहीं समुद्र तट
से दूर आंतरिक भाग में स्थित लोगों का जीवन मौसमी
परिवर्तन से पूरी तरह प्रभावित हो जाता है।

७) समुद्र तल से ऊँचाई → ऊँचाई के साथ तापमान घटता है।
 मैदानों की तुलना में विरल वृष्टि के कारण पर्वतीय प्रदेश
 और दार्जिलिंग एक ही अक्षांश पर स्थित हैं। जैसे - आगरा
 में आगरा का तापमान 16°C जबकि दार्जिलिंग में यह 4°C
 होता है।

vi) उच्चावच → भारत का भौतिक स्वरूप अथवा उच्चावच
 तथा ढाल की मात्रा और तापमान, वायुदाब, पवनों की गति एवं दिशा तथा
 वितरण को प्रभावित करता है। जैसे -
 जून और जुलाई के बीच पश्चिमी घाट तथा असम के
 पवनविमुखी ढाल अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं जबकि इसी
 समय पश्चिमी घाट के साथ लगा पश्चिमी पठार पवनविमुखी
 स्थिति के कारण कम वर्षा प्राप्त करता है।



(२) वायुदाब एवं पवनों से जुड़े कारक

भारत की स्थानीय जलवायुओं में पायी जाने वाली विविधता को समझने के लिए निम्न तीन कारकों की क्रिया-विधा को जानना आवश्यक है -

- (i) वायुदाब एवं पवनों का धरातल पर वितरण,
- (ii) भूमंडलीय मौसम को नियंत्रित करने वाले कारकों एवं विभिन्न वायु-राशियों एवं जेट प्रवाह के अंतर्वाह द्वारा उत्पन्न वायुसंचरण
- (iii) शीतकाल में 50° विहोमी तथा $40-50$ मानसून काल में उष्ण कटिबंधीय अवदावों के भारत में अंतर्वाहन के कारण उत्पन्न वर्षा की अनुकूल दशाएँ।